गुप्त काल, भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम युग था। यह काल लगभग 320 ईस्वी से 550 ईस्वी तक रहा। इस काल में कई प्रतापी शासक हुए जिनमें श्रीगुप्त (लगभग 240-290 ईस्वी),घटोत्कच (लगभग 290-319 ईस्वी),चंद्रगुप्त प्रथम (319-335 ईस्वी),समुद्रगुप्त (335-380 ईस्वी),चंद्रगुप्त द्वितीय (380-415 ईस्वी),कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ईस्वी),स्कंदगुप्त (455-467 ईस्वी) आदि प्रमुख थे।इन शासकों के अलावा भी कई अन्य गुप्त शासक हुए, जिन्होंने अपने-अपने समय में साम्राज्य के विकास में योगदान दिया। इस दौरान भारत ने कला, विज्ञान, साहित्य, गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की।

गुप्त काल की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं:

* समृद्धि और शांति: गुप्त काल में भारत में समृद्धि और शांति का माहौल था। व्यापार और वाणिज्य फला-फूला, जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई।
* कला और साहित्य का विकास: इस काल में कला और साहित्य का बहुत विकास हुआ। कालिदास जैसे महान कवि और नाटककार इसी काल में हुए। अजंता की गुफाओं में बनी चित्रकारियाँ और मूर्तियाँ गुप्त काल की कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
* विज्ञान और गणित में प्रगति: गुप्त काल में आर्यभट्ट, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त जैसे महान वैज्ञानिक और गणितज्ञ हुए। आर्यभट्ट ने शून्य (0) की खोज की और दशमलव प्रणाली का विकास किया।
* खगोल विज्ञान में उन्नति: गुप्त काल में खगोल विज्ञान में भी बहुत प्रगति हुई। आर्यभट्ट ने पृथ्वी के गोल होने और सूर्य के चारों ओर घूमने के बारे में बताया।
* धार्मिक सहिष्णुता: गुप्त काल में विभिन्न धर्मों के लोग शांति और सद्भाव से रहते थे। हिंदू धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म और जैन धर्म भी फले-फूले।

गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है क्योंकि इस काल में भारत ने हर क्षेत्र में उन्नति की और विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई।